IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,Iss 11, 2022

खादी: आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक सशक्तिकरण के संदर्भ में

विवेक
शोधार्थी
YBN University

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास केवल राजनीतिक संघर्ष की कहानी नहीं है, अपितु यह सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों का भी संग्रह है। इस महान संघर्ष के प्रतीकों में से एक था खादी – हाथ से काता और बुना हुआ कपड़ा, जिसे महात्मा गांधी ने भारतीय आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में पुनर्जीवित किया। खादी न केवल वस्त्र था, बल्कि एक विचार था, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का आधार बना। महात्मा गांधी का खादी के प्रति दृष्टिकोण, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और समाज के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रस्तुत लेख स्वतंत्रता आंदोलन में खादी की भूमिका, उसकी उत्पत्ति एवं सामाजिक-आर्थिक महत्त्व को रेखांकित करते हुए आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक सशक्तिकरण में इसके योगदान का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द: खादी, ग्रामोद्योग, चरखा, आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, स्वतंत्रता आंदोलन।

परिचय

महात्मा गांधी के भारत की स्वतंत्रता का दृष्टिकोण उनकी आर्थिक विचारधारा के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। उनका मत था कि सच्ची स्वतंत्रता केवल आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक सशक्तिकरण के माध्यम से ही हासिल की जा सकती है। इस विचारधारा का सबसे शक्तिशाली प्रतीक खादी- 'हाथ से काता और बुना हुआ कपड़ा' था, जो भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एक प्रेरणा स्रोत बना।

महात्मा गांधी का खादी के प्रति लगाव भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक अभिन्न अंग था। उन्होंने इसे केवल एक वस्त्र के रूप में नहीं देखा, बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के प्रतीक के रूप में भी देखा। गांधीजी ने खादी को भारतीय स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम माना। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राजनीतिक संघर्ष की कहानी नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों का भी संग्रह है। इस महासंघर्ष के प्रतीकों में से एक था खादी, जिसे गांधीजी ने भारतीय आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में पुनर्जीवित किया। खादी न केवल कपड़ा था, बल्कि एक विचार था, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का स्तंभ बना। गांधी ने अपनी आर्थिक दृष्टि को प्राप्त करने के लिए खादी को एक शक्तिशाली साधन के रूप में देखा। उन्होंने खादी को भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतीक और आर्थिक सशक्तिकरण के साधन के रूप में अपनाने का समर्थन किया। लोगों को अपना कपड़ा कातने एवं बुनने के लिए

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

प्रोत्साहित करके, गांधीजी ने एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाने हेतु कोशिश की, जो भारत की विदेशी आयातों पर निर्भरता को कम कर सके।

इस लेख का मुख्य उद्देश्य महात्मा गांधी का खादी के प्रति दृष्टिकोण को समझना और यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार से खादी ने आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण में योगदान किया।

खादी का ऐतिहासिक संदर्भ

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक खादी का इतिहास भारतीय समाज में बहुत पुराना है। प्राचीन काल में यह कपड़ा कत्तन और बुनाई का एक प्रमुख हिस्सा था। औपनिवेशिक काल में खादी की भूमिका में बदलाव आया, जब ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारतीय वस्त्र उद्योग को कमज़ोर किया।

गांधीजी ने खादी को स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्रीय तत्त्व बनाया। उन्होंने इसे आत्मनिर्भरता और स्वदेशी आंदोलन के प्रतीक के रूप में देखा। गांधीजी का मानना था कि खादी केवल एक कपड़ा नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सुधार का साधन है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, केवल राजनीतिक संघर्ष ही नहीं था, बल्कि एक व्यापक सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन का भी प्रतीक था। इस संघर्ष में खादी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

खादी और स्वदेशी आंदोलन

स्वदेशी आंदोलन का उद्देश्य विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना था। खादी इस आंदोलन का प्रमुख प्रतीक बन गया। गांधीजी ने खादी को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया और लोगों से विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर खादी पहनने का आह्वाहन किया। खादी का उत्पादन और उपयोग न केवल भारतीय कपड़ा उद्योग को पुनर्जीवित करने का एक प्रयास था, बल्कि यह ब्रिटिश औद्योगिक अर्थव्यवस्था को चुनौती देने का भी एक साधन था। उन्होंने चरखे को स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बताया। ब्रिटिश शासन के अधीन भारत में पारंपरिक उद्योग एवं हस्तशिल्पों का ह्रास हुआ। ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति ने भारतीय कुटीर उद्योगों को बर्बाद कर दिया तथा साथ ही भारतीय किसानों एवं कारीगरों की आजीविका पर गहरा संकट छा गया। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय बाज़ार में विदेशी वस्त्रों की बाढ़ ला दी, जिससे भारतीय कपड़ा उद्योग लगभग समाप्त हो गया।

गांधीजी ने इस आर्थिक शोषण के खिलाफ़ खादी आंदोलन का सूत्रपात किया। उन्होंने खादी को स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक बनाया, जिसका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित कर ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों का बहिष्कार करना था। गांधीजी ने खादी को भारतीय आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण का प्रतीक माना।

गांधीजी ने 1918 में खादी आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आर्थिक यंत्र के रूप में देखा। उन्होंने भारतीय जनता को चरखा चलाने एवं खादी पहनने के लिए प्रेरित किया, जिससे भारत की

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

आत्मनिर्भरता और समाजिक सशक्तिकरण को बल मिल सके। खादी आंदोलन ने भारतीय समाज में सामाजिक समरसता, आर्थिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय एकता की भावना को मज़बूत किया।

महात्मा गांधी और खादी: एक विश्लेषण

भोजन के उपरांत वस्त्र का अत्यंत ही महत्व है। यदि मनुष्य भोजन और वस्त्र में स्वावलंबी हो जाता है तो वह स्वतंत्र हो जाता है। स्वावलंबन की वह प्रक्रिया हरेक मनुष्य के स्वावलंबन, परिवार के स्वावलंबन, गाँव के स्वावलंबन से आगे चलकर राष्ट्र स्वावलंबन में परिवर्तित होती है। मनुष्य के पास भगवान ने हाथ-पैर की बड़ी शक्ति दी है। उस शक्ति का इस्तेमाल यदि प्रत्येक मनुष्य करता है, तो उसका कर्त्तव्य बढ़ता है। बच्चों से लेकर वृद्धों तक और पुरूषों से लेकर स्त्रियों तक सबके हाथ चलते हैं तो प्रतिदिन करोड़ों गज कपड़े का निर्माण होता है। गाँधीजी ने इसे प्रतिदिन का यज्ञ, शिक्षण का माध्यम, जीवन की सुरक्षा एवं श्रम की प्रतिष्ठा माना। प्रत्येक दिन अरबों घंटे हमारे बेकार हो रहे हैं। उनका सदुपयोग चरखे से ही संभव है। चरखा पेट भर अन्न, तन भर कपड़ा एवं स्वाभिमानपूर्वक अपने घर में बैठकर धन अर्जित करने की शक्ति देता है।

गाँधीजी की पैनी दृष्टि इसी चरखे की ओर पड़ी तथा इसके धागे को इन्होंने सोने-चाँदी से भी श्रेष्ठ माना। उन्होंने सूत की करेंसी भी चलाई। उत्पादक-श्रमिक को प्रतिष्ठा प्रदान की। स्वदेशी धर्म के पालन का यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि हम विदेशी चीजों से घृणा करें। गाँधीजी तो मानवमात्र की सेवा की बात करते थे। उनका मत है कि स्वदेशी का सच्चा उपासक कभी भी किसी से घृणा भाव नहीं रख सकता है। कोई वस्तु विदेशी है, इसलिए उसका बहिष्कार नहीं करना चाहिए। परंतु उन सभी विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार किया जाना चाहिए जिनके आयात से तत्संबंधी हितों को हानि पहुँचाने की संभावना हो। जो वस्तुएँ अपने देश में उपलब्ध नहीं हैं, उनको मँगाने में कोई हर्ज नहीं है। गाँधीजी के अनुसार, "किसी भी चीज़ को स्वदेशी तभी कहा जा सकता है, जबकि यह सिद्ध हो जाए कि वह जनसमुदाय के लिए हितकारी है एवं उसमें काम करने वाले कारीगर तथा मज़दूर दोनों हिंदुस्तानी हैं।"

गाँधीजी स्वदेशी को किसी भी देश के लिए महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य मानते थे। सभी देशों को स्वदेशी धर्म का पालन करना चाहिए। हम देखते हैं कि सभी देश अधिकतम निर्यात एवं न्यूनतम आयात करना चाहते हैं। इस आयात-निर्यात के सिद्धांत में पूँजीवाद और शोषण की भावना समाई हुई है। परंतु गाँधीजी स्वदेशी के विचार को निःस्वार्थ भावना से देखते थे। उनके अनुसार, "स्वदेशी एक सर्वकालीन सिद्धांत है। स्वदेशी की उपेक्षा के परिणामस्वरूप मनुष्य जाति ने अपरिमित दुख भोगा है। स्वदेशी से अभिप्राय है अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन अपने देश में किया जाए और उन्हीं का वितरण उपभोग किया जाए।" इस प्रकार से हम देखते हैं कि गाँधी की स्वदेशी भावना शुद्ध तथा मानव कल्याण पर आधारित है।

ग्रामोद्योग से संबंधी विचार गाँधीवादी अर्थव्यवस्था का व्यावहारिक स्वरूप है। गाँधीजी ने भारतीय संदर्भ को सामने रखकर ग्रामोद्योग संबंधी विचार रखे हैं। सन् 1920 के आसपास भारत में जितने कपड़े का उपभोग होता था, उसका आधा विदेशों से आता था। भारत में पर्याप्त मात्रा में कपास का उत्पादन होता था, परंतु उसका पक्का माल विदेश में जाकर तैयार होता था। इस कारणवश भारत का शोषण बढ़ गया था। गाँधीजी ने भारतीय अर्थव्यवस्था का गहन अध्ययन किया तथा उसके बाद खादी ग्रामोद्योग का विचार देश के सामने प्रस्तुत किया। सन् 1908 में

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

गाँधीजी के मन में खादी अर्थात् चरखे का विचार आया। तब से जीवनपर्यंत वे इसके प्रचार में लगे रहे। गाँधीजी ने खादी ग्रामोद्योग के संबंध में कहा है कि, "खादी का मूल उद्देश्य प्रत्येक गाँव को अपने भोजन एवं कपड़े में स्वावलंबी बनाना है।" गाँधीजी ने गाँवों के लिए ऐसी आर्थिक व्यवस्था की परीकल्पना की है जो सघन खेती, छोटे पैमाने पर व्यक्तियों द्वारा खाद्य-पदार्थ, साग-सब्जी, फल-फूल का उत्पादन एवं पशुपालन पर आधारित होगी। इस खेती में मशीनें, बड़े पैमाने पर खेती एवं सामूहिक खेती नहीं होगी। दूसरा कृषि के सहायक कुटीर उद्योग विकसित होंगे। उनके लिए कच्चा माल गाँव से ही प्राप्त होगा। तीसरा, पशु-प्रधान कृषि-अर्थव्यवस्था में ऐसी स्थिति होगी कि जो कुछ भूमि से फसलों के रूप में प्राप्त होगा, वह गोबर की खाद के रूप में भूमि को लौटा दिया दिया जाएगा। चौथा, पशु, मनुष्य एवं वनस्पतियों का संबंध उचित तथा संतुलित होगा। उसमें पारस्परिक लाभ की व्यवस्था होगी। पाँचवा, पशु और मनुष्य की शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग एवं संरक्षण होगा। बड़ी-बड़ी मशीनों तथा बाजारों द्वारा इनका शोषण नहीं किया जाएगा। छठा, ग्रामोद्योग का पूर्ण विकास किया जाएगा तथा उसमें चरखा एवं खादी सबसे बड़ा केंद्र होगा। सभी व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं हेतु अपने ही उपकरणों, अपने ही हाथ-पैर पर निर्भर रहेंगे। इस प्रकार सबका आत्मनिर्भर एवं स्वाभिमानपूर्ण जीवन होगा।

चरखा और खादी बहुत ही सस्ते एवं सर्वसुलभ हैं। खादी और ग्रामोद्योग की वस्तुओं को महँगी तथा मिल के कपड़ों और कारखाने की वस्तुओं को सस्ता समझना हमारी गलतफहमी है। मिल और कारखाने अपनी बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा लाखों मनुष्यों को बेकार कर देते हैं, ये बेकार मनुष्य क्रयशक्ति-विहीन होकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तड़पते हैं, भूखे मरते हैं, वस्त्रविहीन होते हैं। कोई भी कल्याणकारी सरकार मिलों एवं कारखानों पर कर लगाकर, इन बेकार मनुष्यों को भिक्षा देकर, दान देकर जीवित रखती हैं। ऐसे मनुष्य, जो सरकार की इस भिक्षा पर जीवित हैं, स्वाभिमान-रहित, पशुवत जीवन व्यतीत करते हैं। उनका जीवन एक गुलाम से भी अधिक तिरस्कृत होता है। इनके हाथ-पैर, इनकी बुद्धि बेकार होती है। उनका व्यक्तित्व काम न करने से ही समाप्त हो जाता है, शारीरिक विकास भी नहीं होता, वे रोगग्रस्त होते हैं। कल्याणकारी राज्यों को इन सबकी सुरक्षा की व्यवस्था करनी पड़ती है। इन्हें भिक्षुक कर्मशाला चलानी पड़ती है। यह बेकारी जघन्य अपराध एवं पाप का आधार बनती है। इस कारण से अपराधवृद्धि, अनैतिकता आदि का प्रसार होता है। यह मिल एवं कारखानों की मशीनों का परिणाम हैं। यह बहुत ही महँगा पड़ता है।

जो थोड़े से मनुष्य औद्योगिक नगरों में इन मशीनों के पुर्जे बनकर काम करते हैं, वे गंदी बस्तियों, गंदे वातावरण, गंदे जीवन के कारण अपने सारे मानवीय आनंद से दूर हो जाते हैं। उनकी व्यवस्था हेतु, उनके कल्याण के लिए राज्य को श्रम कल्याण कार्य करना पड़ता है। यह सब इन मशीनों और कारखानों के कारण ही होता है। अतः इनकी भी कीमत कम नहीं चुकानी पड़ती है।

ग्रामोद्योग की वस्तुओं के उपभोग से, जैसे हाथ की बनी चीनी, हाथकुटा चावल, तेलघानी का तेल आदि बहुत ही स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। इसके उपभोग से मनुष्य स्वस्थ एवं दीर्घायु होता है। उसे अस्वस्थता पर, बीमारी पर बिल्कुल ही व्यय नहीं करना पड़ता है। परंतु, जब हम मिल की चीनी, मिल के तेल, मिल के चावल का उपभोग करते हैं, तो अनेक रोगों के शिकार होते हैं। उन्हें डॉक्टर एवं औषधियों पर अधिक व्यय करना पड़ता है। इसलिए, ग्रामोद्योग की वस्तुएँ सस्ती और मिल-कारखाने की वस्तुएँ महंगी पड़ती हैं।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,Iss 11, 2022

खादी एवं खादी बनाने के उपकरण का स्वामित्व श्रमिक का होता है। इसलिए, उसमें मालिक या मजदूर के विचार आते ही नहीं। किसी प्रकार के हड़ताल एवं तालाबंदी के लिए कोई गुंजाइश नहीं होती। बच्चों से लेकर वृद्धों तक की रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है। वह अपने स्वस्थ परिवार के वातावरण में, अपने घर और प्राकृतिक वातावरण में प्रत्येक मनुष्य कार्य करता है तथा कार्य का आनंद लेता है। वह अपने हाथ से तैयार किए गए कपड़ों का प्रयोग करता है और अपने संसार का निर्माण स्वयं करता है। यह बाज़ार से हटकर परिवार में सारी मूलभूत आवश्यकताओं की तृप्ति करता है। खादी द्वारा प्राप्त सारी संपत्ति इस स्वावलंबी मनुष्य की होती है। अपने हाथ से कटी हुई, अपने हाथ से बनी हुई, अपने हाथ से घुली हुई खादी धारण करके वह सुख की अनुभूति प्राप्त करता है। कारखाने के कपड़े से खादी बहुत ही सस्ती पड़ती है। खादी की और कारखाने के कपड़े की पूर्ण लागत या यूं कहें कि वास्तविक लागत को जब हम समझते हैं तो कारखाने का कपड़ा बहुत ही महँगा पड़ता है।

खेती-बाड़ी के साथ-साथ या अन्य व्यवसायों में साथ-साथ छोटे से चरखे अथवा छोटे से ग्रामोद्योग के यंत्र को लेकर मनुष्य मनोरंजन के रूप में उत्पादन कार्य करता है। जितना समय व्यक्ति का आलस्य एवं बेकारी में नष्ट हो जाता है, वह खादी अथवा अन्य वस्तुओं के बनाने में लगता है। इसलिए इसकी कोई विशेष लागत नहीं होती। यह तो आनंद के लिए एक कार्य बन जाता है, क्योंकि कार्य का परिवर्तन ही अवकाश एवं आनंद है।

यह भी एक भ्रम है कि मिल एवं कारखानो में अधिक उत्पादन होता है। एक गाँठ रुई से कारखानें में जितना कपड़ा बनता है, उतना ही कपड़ा चरखे से भी बनता है। जितना तेल, जितना आटा मिल एवं कारखानों से एक किलो कच्चे माल से तैयार होता है उतना ही ग्रामोद्योग के यंत्रों से भी बनता है। अंतर केवल इतना है कि वे बड़े पैमाने के उद्योग हैं तथा ग्रामोद्योग लघु उद्योग है। यह अधिक और कम उत्पादन का विचार भी भ्रांतिमूलक है।

इस दृष्टिकोण से खादी का अर्थशास्त्र हमारे लिए बहुत ही किफ़ायती, बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक तथा बहुत ही लाभकारी है। गांधीजी ने खादी को आत्मनिर्भरता और स्वदेशी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण अंग माना। उनका मानना था कि खादी का उत्पादन भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देगा। गांधीजी ने खादी को ग्रामीण स्त्रियों तथा शोषित वर्गों के सशक्तिकरण का भी एक साधन माना। खादी का उत्पादन एवं विपणन, इन वर्गों को आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान प्रदान करने का एक तरीका था।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि खादी आंदोलन का सामाजिक प्रभाव व्यापक था। इसने भारतीय समाज में कई सामाजिक सुधारों की शुरुआत की। खादी ने स्त्रियों के लिए रोज़गार के अवसर प्रदान किए, जिससे वे आत्मनिर्भर, सामाजिक रूप से सशक्त हुई। खादी उत्पादन में स्त्रियों की भागीदारी ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर समाज में उनकी स्थिति को मजबूत किया। इसके अतिरिक्त, खादी ने जाति व्यवस्था के विरूद्ध एक मजबूत संदेश दिया। गांधीजी ने खादी को सभी जातियों एवं समुदायों के लिए समान कपड़े के रूप में प्रचारित किया। इससे भारतीय समाज में समानता एवं सामाजिक समरसता की भावना को बल मिला। खादी ने उच्च एवं निम्न जातियों के मध्य की खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,Iss 11, 2022

खादी का विकास और प्रभाव

गांधीजी के प्रयासों से खादी का उत्पादन और उपभोग बढ़ा। कई खादी संस्थान स्थापित किए गए एवं खादी को राष्ट्रीय पहचान प्राप्त हुई। खादी को न केवल स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक माना गया, बल्कि एक आर्थिक और सामाजिक सुधार के रूप में भी देखा गया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, खादी केवल आर्थिक और सामाजिक सुधारों का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक प्रतिरोध का भी एक शक्तिशाली हथियार था। खादी पहनना ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ एक प्रतिरोध का प्रतीक बन गया। स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न आंदोलनों जैसे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में खादी एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में उभरा।

गांधीजी ने खादी को 'स्वराज की पोशाक' कहा एवं इसे स्वतंत्रता संग्राम का अनिवार्य हिस्सा बना दिया। खादी ने भारतीय जनता को एकजुट किया और उन्हें स्वतंत्रता की लड़ाई में सहभागी बनाया। खादी ने भारतीय समाज को आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से जागरूक तथा संगठित किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा मिली।

खादी के उत्पादन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर बढ़े। महिला श्रमिकों को आर्थिक स्वतंत्रता एवं सम्मान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, खादी ने भारतीय वस्त्र उद्योग को पुनर्जीवित किया तथा स्वदेशी कपड़ों की मांग को बढ़ावा दिया। खादी आंदोलन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की। ब्रिटिश शासन के दौरान, भारतीय कुटीर उद्योग लगभग समाप्त हो गए थे, लेकिन खादी आंदोलन ने इन उद्योगों को पुनर्जीवित किया। खादी के उत्पादन ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर पैदा किए और भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया।

खादी उत्पादन के माध्यम से, भारतीय किसान तथा कारीगर अपने लिए आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकें। खादी ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया एवं उन्हें ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों की आवश्यकता से मुक्त किया। गांधीजी का मानना था कि खादी के माध्यम से भारत अपनी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है तथा ब्रिटिश औद्योगिक शोषण से मुक्त हो सकता है।

खादी की वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ

खादी आंदोलन के सामने कई चुनौतियाँ थीं। खादी का उत्पादन श्रम साध्य एवं समय-साध्य था, जिससे यह ब्रिटिश मिलों में तैयार कपड़ों के मुकाबले महंगा था। इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश सरकार ने खादी आंदोलन को कुचलने के लिए कई प्रकार के प्रतिबंध एवं नीतियाँ लागू कीं, जिससे खादी का उत्पादन और उपभोग प्रभावित हुआ।

इसके बावजूद, खादी आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा भारतीय समाज में स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता की भावना को सुदृढ़ किया। खादी के प्रति गांधीजी का समर्पण तथा उनका नेतृत्व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था।

आज भी खादी भारतीय समाज में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। यह स्वतंत्रता संग्राम की धरोहर है और आत्मनिर्भरता की प्रतीक है। हालांकि, इसके समक्ष कई चुनौतियाँ हैं जैसे कि आधुनिक वस्त्र उद्योग की प्रतिस्पर्धा

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

और गुणवत्ता से संबंधित मुद्दे। खादी के उत्पादन एवं विपणन में चुनौतियाँ शामिल हैं जैसे कि तकनीकी एवं वित्तीय समस्याएँ। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार और सामाजिक संगठनों को नई नीतियाँ एवं समर्थन प्रदान करने की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता के बाद खादी की स्थिति

भारत की स्वतंत्रता के बाद खादी का महत्त्व कम नहीं हुआ। इसे भारतीय पहचान और संस्कृति का एक अभिन्न अंग माना गया। भारत सरकार ने खादी और ग्रामोद्योग आयोग की स्थापना की, जिसका उद्देश्य खादी के उत्पादन एवं विपणन को प्रोत्साहित करना था।

आज भी खादी भारतीय समाज में एक विशेष स्थान रखता है। यह केवल एक कपड़ा नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं स्वतंत्रता संग्राम की गाथा का प्रतीक है। खादी भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा रोज़गार सृजन का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। स्वतंत्रता के पश्चात् खादी ने अपनी उपयोगिता बनाए रखी है तथा आज भी इसे भारतीय समाज में उच्च सम्मान प्राप्त है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता आंदोलन में खादी की भूमिका ऐतिहासिक एवं बहुआयामी थी। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा था, जिसने भारत को आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया। खादी ने न केवल ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों का बहिष्कार किया, बल्कि यह भारतीय आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान का प्रतीक भी बना। गांधीजी का मानना था कि खादी के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति का जीवन परावलंबी न होकर स्वावलंबी होगा और फिर स्वावलंबन से हम परस्परावलंबन की ओर बढ़ेंगे। इससे देश का उत्पादन बढ़ेगा, शोषण समाप्त होगा, भ्रातृत्व की भावना बढ़ेगी। यहीं पर स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व की क्रांति का संदेश अपनी मंजिल पाएगा। जाति-विहीन एवं शोषण-विहीन समाज का सपना पूरा होगा। गाँधीजी इसीलिए श्रम को आर्थिक आवश्यकता न मानकर सांस्कृतिक आवश्यकता मानते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महात्मा गांधी ने खादी को आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया। खादी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज भी इसका महत्त्व बना हुआ है। खादी का विकास और इसे अपनाने से भारतीय समाज में आर्थिक और सामाजिक सुधार लाने में मदद मिली है। आज भी खादी भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। खादी न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक है, बल्कि यह सामाजिक समानता और राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,Iss 11, 2022

खादी की विरासत हमें आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के महत्व की याद दिलाती है, जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान थी।

संदर्भ सूची

1. गांधी, एम. के. (1925). *हिंद स्वराज.*
2. चोपड़ा, आर. (2010). *गांधीजी और खादी: एक ऐतिहासिक विश्लेषण.* हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय: दिल्ली विश्वविद्यालय.
3. पाण्डेय, पी.के. (2015). *गांधीजी का आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन.* हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय: दिल्ली विश्वविद्यालय.
4. शर्मा, एस. (2015). *स्वदेशी आंदोलन और खादी: सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य.* जर्नल ऑफ इंडियन स्टडीज़, 20(2), 45-67.
5. पटेल, ए. (2018). *खादी का विकास और प्रभाव.* भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 25(1), 78-90.
6. मिश्रा, के. (2020). *गांधीजी की खादी: आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का अध्ययन.* सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 30(3), 112-130.